तालिबान के खिलाफ आवाजें

इन विरोध प्रदर्शनों को जिस तरह से दबाने की कोशिश हुई, उसने नई और सुधरी हुई छवि के तालिबान के दावों पर भी सवालिया निशान लगा दिया। यूं तो राजधानी काबुल पर कब्जे के बाद तालिबान ने देश भर में आम माफी का ऐलान किया।

अंजु सिंह।।

अफगानिस्तान के जलालाबाद शहर में शांतिपूर्ण विरोध करते लोगों पर तालिबान द्वारा फायरिंग की घटना विचलित करती है। इस घटना में कम से कम तीन लोगों के मारे जाने और करीब एक दर्जन के घायल होने की सूचना है। नागरिकों की ओर से तालिबान के शांतिपूर्ण विरोध की खबरें कुछ अन्य शहरों से भी मिल रही हैं। काबुल में भी कुछ महिलाओं के हाथों में पोस्टर लेकर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने का विडियो वायरल हो रहा है। ये तस्वीरें और विडियो बताते हैं कि हिंसा और दहशत का इतिहास रखने वाले तालिबान के खिलाफ वहां आवाजें उठ रही हैं और उससे यह बर्दाश्त नहीं हो रहा। इससे यह भी पता चलता है कि तालिबान ने भले ही देश के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है, लेकिन सभी लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया है। इसकी वजह यह भी हो सकती है कि पिछले 20 वर्षों में अफगानिस्तान में बड़े बदलाव आए थे। समाज में खुलापन आया था। लड़कियों को काम करने और पढ़ने की आजादी मिली थी। परदे में रहने की बंदिशें नहीं थीं। इस बीच, सड़क और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएं बेहतर हुईं। अफगानिस्तान में 11 फीसदी लोगों की इंटरनेट तक पहुंच है, जो साल 2000 में शून्य फीसदी था। इन सबके बीच प्रशासन से लोगों की उम्मीदें भी बढ़ी हैं। वहीं, 1996–2001 के बीच जब तालिबान का देश पर राज था, तब अफगानिस्तान मध्ययुगीन दौर में चला गया था। औरतों पर तमाम बंदिशें थीं। पुरुषों को दाढ़ी रखनी पड़ती थी। अपराधों के लिए बीच सड़क पर सजा दी जाती थी।

इन प्रदर्शनों को देखकर लगता है कि लोग उस दौर के जुल्म को भूले नहीं हैं और वे पिछले 20 वर्षों में मिली आजादी भी गंवाने के लिए तैयार नहीं हैं। इन विरोध प्रदर्शनों को जिस तरह से दबाने की कोशिश हुई, उसने नई और सुधरी हुई छवि के तालिबान के दावों पर भी सवालिया निशान लगा दिया। यूं तो राजधानी काबुल पर कब्जे के बाद तालिबान ने देश भर में आम माफी का ऐलान किया। लोगों से बेखटके सामान्य जीवन जीने की अपील की। महिलाओं को शरीयत के मुताबिक सरकार तक में हिस्सेदारी देने जैसी बातें भी कीं। लेकिन जलालाबाद की घटना से लगता है कि तालिबान बदला नहीं है, वह सिर्फ बदलने का दिखावा कर रहा है। वह भी इसलिए कि देश पर शासन करने के लिए उसे लोगों का समर्थन और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से स्वीकृति चाहिए। जलालाबाद और अन्य शहरों में अगर तालिबान ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन होने दिया होता तो शायद उसे उसके बदलने का संकेत माना जाता। वह दुनिया को दिखा सकता था कि तालिबान असहमति का सम्मान करना जानते हैं। मगर निहत्थे लोगों पर अंधाधुंध फायरिंग की यह घटना बताती है कि उसकी कथनी और करनी में काफी फर्क है। अभी तक के संकेत देखकर यह भी कहना मुश्किल है कि तालिबान बदल गया है।

समय जरूर बदलेगा

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

जब जीवन ने खाना बना लिया तो श्री राम जी के साथ लक्ष्मण भी आ गए और इस बार श्री राम जी ने कहा की कल हम अपनी पत्नी के साथ आएंगे उनके लिए भी खाना बनाना है अब जीवन भी सोच में पड़ गया की अब क्या होगा अब तो और भी जयादा खाना बनेगा अगले दिन जीवन ने खाने के लिए और जयादा समान माँगा तो साधू को कुछ शक हुआ कही ये समान को बेच तो नहीं रहा है इसलिए साधू जी भी उसके पीछे चले गए तब साधू ने देखा की जीवन खाना बना रहा है और उसके साथ श्री राम जी और सीता जी भी है साधू धन्य हो गया उन्होंने ने भगवान् के दर्शन कर लिए थे। साधू जी उनके पास गए और श्री राम जी के चरण धो कर उनका स्वागत किया और तब जीवन को पता चला की यह तो भगवान् श्री राम जी है और जीवन ने उनको प्रणाम किया और अपने हाथो से खाना दिया दोनों का जीवन धन्य हो गया था।

संपादकीय

घुसपैठ के पांच प्रयास

2013 में सत्ता संभालने के बाद से ही राष्ट्रपति शी ने दक्षिण चीन सागर सहित भारत के सीमांत इलाकों पर सामरिक व सैन्य दबाव बढ़ाकर अपने विस्तारवादी सपनों को पूरा करने की नीति लागू की है। इसके तहत चीनी सेना ने 2017 में डोकलाम सहित कुल पांच बार भारतीय इलाकों में सैन्य घुसपैठ की है। हर बार भारतीय पक्ष ने अपने इलाके को खाली कराने में कामयाबी हासिल कर ली। बहरहाल, चीन के अड़ियल रुख के मद्देनजर ऐसा लगता है कि 2020 की बर्फीली सर्दियों की तरह 2021 की सर्दियों में भी भारतीय सेना को वहीं तैनात रहना होगा। हालांकि वित्तीय संकट में चल रही भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए पूर्वी लद्दाख के सीमांत इलाकों की बर्फीली चोटियों पर 50 हजार से अधिक सैनिकों को तैनात रखने पर रोजाना औसतन 150 करोड़ रुपये का खर्च भारी साबित हो रहा है। लेकिन राष्ट्रपति शी चिन फिंग की विस्तार की नाजायज महत्वाकांक्षाओं का डटकर मुकाबला अगर आज नहीं किया तो 2047 तक चीन को दुनिया का नंबर एक ताकतवर और विकसित देश बनाने के उनके सपनों को पर लग जाएंगे। इस बार राष्ट्रपति शी यह संदेश नहीं देना चाहते कि चीनी सेना भारतीय दबाव में पीछे हटी है। लेकिन भारत के जांबाज सैनिक पिछले साल 15 जून के गलवान हमले से प्रेरणा लेते हुए इस बार भी अपनी एक इंच जमीन न छोड़ने के संकल्प पर डटे हैं।

भारत यदि इस प्रस्ताव को स्वीकार करता है तो भारतीय इलाके का एक हिस्सा चीन के पास ही रह जाएगा। इसलिए भारत के रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री और सेना प्रमुख सबने साफ कर दिया है कि इस मसले पर झुकने का सवाल ही नहीं उठता।

गहन सौदेबाजी

रंजीत कुमार।।

पूर्वी लद्दाख की सीमांत बर्फीली चोटियों पर गत डेढ़ वर्षों से डेरा जमाए बैठे चीनी सैनिकों को वापस पुरानी स्थिति पर लौटने के लिए राजी करने में इस बार भी कामयाबी नहीं मिली। अपने विदेश मंत्री के भारत को भरोसा दिलाने वाले दुशांबे में दिए गए बयानों के विपरीत चीन ने 10 अक्टूबर को हुई 13वें दौर की सैन्य कमांडर वार्ता के दौरान अड़ियल रुख अपनाया और कहा कि भारत गैरवाजिब और अनुचित मांग कर रहा है जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। पिछले साल पांच मई को पूर्वी लद्दाख के कई क्षेत्रों (गलवान, पैंगोंग झील, गोगरा, हॉट स्प्रिंग) और उसके पहले देपसांग के इलाकों में की गई सैन्य घुसपैठ को खत्म करने के लिए चीन ने भारत से गहन सौदेबाजी की है। लेकिन भारत ने दृढ़तापूर्वक कह दिया है कि 5 मई से पहले की यथास्थिति बहाल करने पर ही बात बनेगी। गलवान, पैंगोंग झील के इलाके में तो चीनी सैनिक वास्तविक नियंत्रण रेखा पर वापस लौटने की सहमतियों का पालन कर चुके हैं। लेकिन इसमें भी चीन का पलड़ा इस मायने में भारी रहा है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा के भारतीय इलाकों में बफर जोन बनाया गया है, जहां भारतीय सेना गश्त नहीं कर सकेगी। यह भारतीय सेना की जीत इस मायने में कही जा सकती है

कि आखिर चीनी सेना उन इलाकों में दोनों को मान्य वास्तविक नियंत्रण रेखा के अनुरूप पीछे हटने को मजबूर हुई है। लेकिन चीन दो कदम आगे बढ़कर एक कदम पीछे हटने की रणनीति पर चल रहा है। इसके अनुरूप चीनी राजनेता और आला राजनयिक बार–बार कह रहे हैं कि भारत और चीन बीच रास्ते में मिल कर कोई समाधान खोजें।

आधे रास्ते पर मिलकर मसले का हल खोजने के चीनी प्रस्ताव का मतलब यही है कि वह जिन भारतीय इलाकों में बढ़ चुका है वहां से आधा रास्ता पीछे लौटने पर विचार हो। भारत यदि इस प्रस्ताव को स्वीकार करता है तो भारतीय इलाके का एक हिस्सा चीन के पास ही रह जाएगा। इसलिए भारत के रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री और सेना प्रमुख सबने साफ कर दिया है कि इस मसले पर झुकने का सवाल ही नहीं उठता। चीन को स्पष्ट संदेश दे दिया गया है कि चीनी घुसपैठ को निरस्त करने के लिए भारत अनंत काल तक डटे रहते हुए मुस्तैदी से अपने इलाके पर दावा जताता रहेगा।

इस बीच भारतीय सेना के लिए सैन्य तैनाती को असहनीय बनाने के इरादे से चीन पूर्वी लद्दाख के सीमांत इलाकों में अपने सैनिकों के रहने–सहने और उनके हथियार रखने के लिए ढांचागत सुविधाएं बढ़ाता जा रहा है। 10 अक्टूबर को दोनों सेनाओं के कमांडरों की 13वें दौर की बातचीत करीब दो महीने बाद हो रही थी। लेकिन इसके पहले पिछले एक महीने में चीन ने उत्तराखंड के बाराहुती और अरुणाचल प्रदेश के सीमांत इलाकों में अपने सैनिकों से अतिक्रमण करवा कर यह संदेश दिया कि वह न केवल पश्चिमी सेक्टर के पूर्वी लद्दाख, बल्कि मध्य सेक्टर के बाराहुती और पूर्वी सेक्टर के अरुणाचल प्रदेश को भी मौजूदा विवादों के घेरे में शामिल कराना चाहता है। चीन इसके पहले यह संदेश दे चुका है कि 1959 में चीन के प्रधानमंत्री चाओ एन लाई ने सीमा मसले का जिस वास्तविक नियंत्रण रेखा के अनुरूप हल करने का प्रस्ताव रखा था, भारत उसे मान ले। उस प्रस्ताव में अक्साई चिन को चीन के शिनच्यांग प्रदेश के तहत शामिल करते हुए प्रस्ताव किया गया था कि दोनों सेनाएं पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से लगने वाली मैकमेहोन रेखा से 20–20 किलोमीटर पीछे हट जाएं, जबकि लद्दाख और अक्साई चिन वाले इलाकों में जो देश जहां तक मौजूद है वहां तक अपना इलाका मान ले।

अष्टयोग-5017

	3		4	1		2
4	28		25		36	
	5			6	7	4
	28	5	35	3	39	
3	2		6		5	
	32	3	42	5	32	
1	5			4		3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5016 का हल

6	3	5	7	4	1	2
1	28	3	40	5	31	7
2	1	7	6	3	5	4
7	34	6	31	2	30	3
3	6	2	4	1	7	5
5	30	4	28	6	35	1
4	5	1	3	7	2	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

अरबों डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा

मोहन। किसी का स्टेटस तीन–तीन बार अपलोड हो जा रहा था तो किसी का कॉमेंट ही गायब हो जा रहा था। खुद मेरी फेसबुक प्रोफाइल पर लोग इन्हीं समस्याओं से जूझते दिखे। दुनिया भर से डेढ़ करोड़ से भी अधिक लोगों ने इस प्रॉब्लम की कंप्लेन की और सभी यह जानना चाहते हैं कि आखिर ऐसा हुआ क्यों? लेकिन अपनी आदत से लाचार इस बदनाम कंपनी ने अभी तक यह नहीं बताया है कि आखिर हुआ क्या था? उसकी इस गड़बड़ी से उसे तो जो अरबों डॉलर का नुकसान उठाना पड़ा, वह तो उठाना ही पड़ा, एक वेबसाइट के मुताबिक दुनिया भर को 11 अरब रुपये का नुकसान उठाना पड़ा। ऐसा इसलिए, क्योंकि लोग फेसबुक पर सिर्फ बातचीत नहीं करते, धंधा भी करते हैं। मार्क जकरबर्ग 'बड़े' आदमी हैं, और फ्रांसेस हॉगन की मानें तो प्रॉफिट को हम जैसे आम यूजर्स के ऊपर रखते हैं। सो उन्हें तो ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। मगर जो छोटे–छोटे व्यापारी इस साइट से अपना व्यापार करते हैं, उनकी हालत खराब हो गई। क्या मार्क जकरबर्ग उनको हुए नुकसान की भरपाई करेंगे?